RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : MISC-II/CPM/09/KPHO/2014-17
प्रधान डाकघर कानपुर–डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/–

दलित भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

फरवरी–2017 | वर्ष – 09 | अंक : 01 | मूल्य : 5/–

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (इं. जल संस्थान इलाहाबाद), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
सहायक ब्यूरो चीफ (उ.प्र.) : चन्द्रिका प्रसाद ओमर, 49ए/52–बी, रुथौरा, आजाद नगर, कानपुर, मो.: 9305256450
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी–5, श्यामलाल का ताता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631 (वाट्स एप)
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम हिन्दुस्तानी, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
फुरकान खान, मो. : 8081577681
राकेश समुन्द्रे, मो. : 9889727574
हरियाणा राज्य :
ब्र. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कन्नौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001,
मो. : 09887512360, 0144–3201516
घिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला–अलवर, मो.–09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravlnbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा–नवीन मार्केट, कानपुर
खाता सं.–33496621020 • IFSC CODE-SBIN0005307

शूद्र एक नस्ल है जाति नहीं

वैज्ञानिक शब्दावली में नस्ल को रेस (RACES) कहते हैं। रेस और नस्ल एक नाम है। यही नस्ल ही वैज्ञानिक शब्दावली में प्रजाति है, किंतु भारत में जिन आर्यों का आगमन हुआ, आगमन के बाद भारत महाद्वीप (भारत, बर्मा, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा श्रीलंका) पर कब्जा और तत्पश्चात खुद आर्यों के तीन भाग (श्रेणी) में बंट जाने के बाद आर्यों ने प्रजाति (RACES) की जगह जाति (CAST) कर दिया जो आज घृणा का घृणितम रूप है। प्रजाति (नस्ल) से जाति की देन आर्यो की सोची–समझी रणनीति के तहत है। हालांकि जातियों का विभाजन पेशे के कारण पेशे के नाम पर हुआ और यह नाम दिया, भूपतियों, सामंतों, मालिकों, तथा नरेश अमात्यों ने, जो कालांतर में जन्मगत हो गया।

भारत में जिस नस्ल (सैंधव, शिवालिक) की उत्पत्ति हुई, वहीं आर्यों के आगमन के हजार वर्ष बाद शूद्र बन गई, बन यों गई कि आर्य अपने को श्रेष्ठ तथा भारतीय नस्ल (प्रजाति) को जाहिल, गंवार, अनार्य, डोम, चांडाल, दास, दस्यु, अबोध, शबर, शांबर, वानर, राक्षस और गुलाम (शूद्र) कहते थे। प्रारंभ में सैंधव और शिवालिक (HOMO SAPIENS-SAPIENS) की जगह शूद्र शब्द का प्रयोग करते थे और करते रहे और अपने को आर्य (SAPIENS) कहते रहे।

भारत में जो आर्य प्रजाति (RACES) है, वह कोई एक तथा आर्य नाम की कोई प्रजाति नहीं है। आर्य का आर्य श्रेष्ठ कहकर बाहर से आई प्रजातियों ने अपने समूह (विदेशी समूह) का नाम रखा है। मुख्यतः आर्य की तीन प्रजातियाँ हैं, जो आज ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के रूप में विभाजित हैं। आर्य का दूसरा नाम (द्विज) भी है। आर्य की तीन प्रजातियां (RACES) निम्नलिखित हैं –

i) निएंडरस्थल (HOMO SAPIENS)-
फूहलरोट ने 1856 में खोज कर बताया कि इस प्रजाति की उत्पत्ति 1.5 लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका में हुई जो कालांतर में यूरोप तथा एशिया (भारत उपमहाद्वीप) आदि में फैली। जो आज द्विज–ब्राह्मण+क्षत्रिय+वैश्य है।

ii) ग्रीमाल्डी(HOMO-SAPIENS-SAPIENS)-
यूजीन डुबाय ने 1891 में खोज कर यह बताया कि इस HOMO ERECTUS प्रजाति की उत्पत्ति मध्य एशिया की पहाड़ियों में हुई जिसकी एक शाखा यूरोप तथा दूसरी शाखा भारतीय उपमहाद्वीप में फैली।

iii) क्रोमेग्नन (CRO-HOMO-SAPIENS)- इस प्रजाति की उत्पत्ति केवल 32000 वर्ष ईसा पूर्व में फ्रांस के डोडोन प्रांत के क्रो–मेग्नन की पहाड़ियों में हुई। इस प्रजाति की खोज–मैक्ग्रीगर ने सन् 1868 में की और बताया कि यह प्रजाति फ्रांस की पहाड़ी से निकलकर प्रथम समूह–इटली, द्वितीय समूह–जर्मनी, तृतीय समूह–भारतीय उपमहाद्वीप, चतुर्थ समूह– चेकोस्लोवाकिया, पंचम समूह–अफ्रीका, षष्ट समूह–इजराइल तथा सप्तम समूह– ईजियन तट पर पसर गई। भारतीय उपमहाद्वीप की शाखा समूह पूर्व की तीन शाखाओं में विलीन हो गई। जो आज द्विज–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के रूप में विद्यमान हैं और आज 1400 उपजातियों में बंटे हुए हैं। आर्य आज एक संकर प्रजाति (नस्ल) है जो सैंधव–शिवालिक को टुकड़ों में बांटकर स्वयं बिखरे हुए हैं।

भूतकाल का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना तो ठीक है किंतु भूतकाल को पढ़कर भूत बन जाना ठीक नहीं है, अथवा भूतकाल का ही होकर नहीं रह जाना चाहिए। डॉ. अंबेडकर ने भूतकाल में केवल आर्य साहित्य को पढ़ा तथा पढ़कर आर्य बनकर रह गए। डॉ. अंबेडकर ने शतपथ ब्राह्मण को वेद की पूर्व की रचना मानकर एक ब्राह्मणी से शादी करने के बाद अपने को आर्य (क्षत्रिय) सिद्धि करने में जीवन बिता दिया। शादी के बाद अंतिम रचना (बुद्ध और बौद्ध धम्म अंतिम रचना है तथा शूद्र कौन थे? शादी के तुरंत बाद लिखा।) शूद्र कौन थे? में लिखते हैं कि शूद्र पहले आर्य (क्षत्रिय) था। अर्थात भारत के सारे शूद्र क्षत्रिय हैं, और आर्य नस्ल के अनुसार डॉ. अंबेडकर ने जबरदस्ती क्षत्रिय बनकर शूद्रों को ब्राह्मणों का जातीय पुछल्ला लगा दिया। जो आज शूद्र लटका हुआ है शून्य में–डॉ. अंबेडकर ने एक तरफ तो शूद्रों को, जो एक विश्व की स्वतंत्र नस्ल है, एक मच्छर की तरह बना दिया कि वह आर्यों का ही एक वर्ण क्षत्रिय है। उधर क्षत्रिय (द्वितीय वर्ण) का पुछल्ला भी जोड़ दिया और उधर बौद्ध धर्म भी ग्रहण कर कह दिया कि बौद्ध धर्म ग्रहण करो। अब करोड़ों शूद्र बीच में लटक गए। न क्षत्रिय लिख पाते हैं, न बन पाते हैं और न क्षत्रिय वर्ण की सुविधा पाते हैं, न हिंदुत्व छोड़ पाते हैं, न बौद्ध अपना पाते हैं और न ही अपनी शूद्र नस्ल की अस्मिता के लिए ही संघर्ष कर पाते हैं। डॉ. अंबेडकर शूद्र नस्ल को अपना मानकर (जो कि वे हैं) शूद्र नस्ल की अस्तित्व की लड़ाई लड़ते, शूद्र–सैंधव या शिवालिक धर्म का या कोई भी नाम देकर बौद्ध धर्म को अपना लेते तो शूद्रों की आज यह दुर्दशा न होती। शूद्र आज मारे–मारे न फिरते।

वर्तमान भारत में निवास करने वाली विदेशी नस्लें

1. आर्यन (ARYAN NORDIC)-

i) आगमन काल–उ.पू. 2000–उ.पू. 1600 तक

ii) भारत में कहां–कहां हैं?–बंगाल, उड़ीसा, केरल, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, सिंध, पंजाब, राजस्थान एवं गंगा की घाटी में बस गए। सैंधव निवासियों का कत्ल करते हुए, अधिकतर भागों पर कब्जा कर लिए। अब सारे भारत वर्ष में फैले हैं, वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में हावी हैं।

iii) विश्व में कहां–कहां से आए?

A. यूरोप के स्टेपी प्रदेश से
B. टुंड्रा प्रदेश के यूराल पर्वत (कंदराएं) से
C. स्वीडेन से
D. नार्वे से
E. ब्रिटेन से
F. मलेशिया से
G. सं रा. अमेरिका से
H. उत्तरी अफगानिस्तान से

iv) नार्डिक की विशेषताएं –

A. शारीरिक एवं मानसिक रूप से श्रेष्ठ
B. आंखों का रंग नीला एवं भूरा
C. सिर माध्यमिक रूप से ऊंचा
D. ललाट सीधा–चमकदार
E. नाक छोटी–प्यारी
F. चेहरा छोटा
G. अक्षर पतले
H. बाल पीले भूरे एवं लहरदार
I. कपाल सूचकांक उत्तम

J. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं अंधविश्वासी

v) वर्तमान पहचान – दक्षिण में द्रविण–ब्राह्मण, अन्य जगहों में क्षत्रिय एवं ब्राह्मण

2. आर्यन – ARYAN (ALPINE)

I. आगमन काल–ई.पू. 1600–ई.पू. 1000 तक

II. भारत में कहाँ–कहाँ हैं ?

महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, केरला, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, बिहार एवं जम्मू–कश्मीर, सैंधव–शिवालिकसे अविराम से खूंखार अल्पाइन संघर्ष करते, हारते–हराते, कब्जा कर यहीं उपनिवेश बनाकर बस गए। धीरे–धीरे यहीं इन्ही में घुल–मिलकर यहीं के होकर रह गए। अब सारे भारत वर्ष में ये अपने चाल–जाल एवं फरेब के बल पर सैंधव। शिवालिक पर हावी होकर दबदबे के साथ रह रहे हैं। आज इनकी रक्तशुद्धता खत्म हो चुकी है क्योंकि सैंधव–शिवालिक शूद्र इनके रक्त में अपना रक्त मिलाकर शूद्र बना चुके हैं।

III. विश्व में कहाँ–कहाँ से आए?

A. मध्य यूरोप के स्टोपी प्रदेश से
B. कोस्टेंस झील से घिरे आल्पस पर्वत की कंदराओं से
C. मध्य एशिया के देमाबंद की कंदराओं से
D. ईजियन सागर की शाखा डेन्यूब की घाटी से
E. बोल्गा नदी की घाटी से

IV. वर्तमान पहचान–दक्षिण भारत में द्रविण तथा अन्य जगह ब्राह्मण

V. आर्यन्स–अल्पाइन की विशेषताएं –

A. शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ
B. कपाल सूचकांक मध्यम
C. सिर ऊँचा, ललाट सीधा
D. नासा सूचकांक मध्यम
E. त्वचा का रंग हल्का श्वेत एवं लाल
F. होंठ पतले गुलाबी
G. औसत कद–165 सेंमी से 170 सेंमी तक
H. चेहरा लंबा चमकदार
I. ईर्ष्यालु एवं कट्टर धार्मिकता

3. भूमध्यसागरीय (MEDITERRANEANS)-

I. आगमन काल–उ.पू.–1200–ई.पू. 400 तक

II. भारत की तीन प्रमुख प्रजातियों (नीग्रेटो, पूर्व द्रविण और मंगोल) के तत्व ही अधिक हैं। ये भूमध्य सागरीय, एल्पो डिनारिक और नार्डिक प्रजाति हैं। इनमें अधिकाधिक भूमध्यसागरीय हैं। इस प्रजाति की अनेक किस्में हैं जो लंबे सिर, काले रंग और अपनी ऊंचाई द्वारा पहचानी जाती हैं, भारत में इस प्रजाति की तीन किस्में निम्नांकित हैं–

क) प्राचीन भूमध्य सागरी–(PALAEO)

ये लोग काले और सांवले होते हैं। चेहरा लंबा लहरदार, नाक चौड़ी, कद–मध्यम, बाल इनके सारे शरीर पर होते हैं। दक्षिण भारत के तमिल ब्राह्मण तथा तेलुगू ब्राह्मण इस प्रजाति की निशानी हैं। ये विशेष धार्मिक तथा असभ्य होते हैं।

वर्तमान पहचान–तमिल ब्राह्मण, तेलुगू ब्राह्मण

(ख) भूमध्यसागरीय–(MEDITERRANEANS)

I. भारत में कहां–कहां हैं?

पंजाब, कश्मीर, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश

वर्तमान पहचान–पंजाब, कश्मीर, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के ब्राह्मण यही हैं। मध्य प्रदेश के मराठा ब्राह्मण, कोचीन, महाराष्ट्र व मालाबार के ब्राह्मण यही हैं।

III. भारत में कहां–कहां से आए?

A. दक्षिण टर्की से
B. निकोसिया (साइप्रस) से तथा
C. पूर्वी यूरोप से

IV. भूमध्य सागरीयंस की विशेषताएं–

A. शारीरिक रूप से स्वस्थ
B. मानसिक रूप से कट्टर, ईर्ष्यालु, हिंसक
C. कपाल सूचकांक मध्यम
D. त्वचा का रंग भूरा–श्वेत
E. आंखों का रंग भूरा
G. बाल–काले, लहरदार

ग) पूर्वी अथवा सेमेटिक प्रजाति (ORIENTAL RACE)

इनकी नाक लंबी–नतोदर है। ये पंजाब, राजस्थान तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैले हैं। इस समय ये कुछ ब्राह्मण तथा कुछ क्षत्रिय के रूप में विद्यमान है।

4. प्रोटो आस्ट्रेलायड (PROTO-AUSTRALOID)-

I. आगमन काल–ई.पू. 600–ई.पू. 400 तक

II. भारत में कहां–कहां हैं?

राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र में बड़ी मजबूती से जमे हुए हैं। यहां पर ये कुछ द्रविण, कुछ अनुसूचित तथा कुछ जनजातियों में मिले हुए हैं। कहीं इनकी पहचान संभव तथा कहीं असंभव हैं। इनकी एक विशेष पहचान है कि ये जहां भी होंगे/हैं। बड़े चालाक, हिंसक एवं धार्मिक कट्टरता लिए हुए हैं। ये पशु बलि में विश्वास रखते हैं, ये गिद्ध दृष्टि रखते हैं।

III. ये कहां–कहां से आए हैं?

A. फिलीस्तीन
B. आस्ट्रेलिया

IV. प्रोटो आस्ट्रेलायड की विशेषताएं–

A. कद छोटा
B. त्वचा का रंग भूरी–काला
C. सिर लंबा, नाक–चपटी, चौड़ी
D. बाल घुंघराले
E. होंठ मोटे और मांसल
F. कपालगुहा का आयतन–1274–1775 CC
G. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं धार्मिक कट्टरता
H. चेहरा मध्यम

V. वर्तमान पहचान–दक्षिण भारत में चेंचू, मलायन, कुरूंबा, यरूबा, मंडा, कोल, संथाल और भील समूह के रूप में विद्यमान। उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में कुर्मी एवं लोहार के रूप में।

6. नीग्रीटो (NEGRITOS)

I. आगमन काल–ई.पू.–1000–ई.पू. 500 तक

II भारत में कहां–कहां हैं?

दक्षिण भारत की जनजातियों में हैं। अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में हैं। असम तथा पूर्वी बिहार की राजमहल की पहाड़ियों में हैं। उत्तर में हिमालय की तलहटी में हैं। दक्षिणी द्वीपों पर हैं।

III. वर्तमान पहचान–अंगामी नागा, बांगड़ी, इरूला, कडार, पुलायन, मुथुवान, कन्नीकर, परियान, सेमांग और ओरांव जनजातियों के रूप में विद्यमान हैं।

IV. भारत में कहां–कहां से आए?

A. सर्वप्रथम मलेशिया से बंगाल की खाड़ी के प्रवेश द्वार से घुसे। कुछ उत्तर में हिमालय की तलहटी में तथा कुछ दक्षिण के द्वीपों पर गए।

B. दूसरी किस्त समूह आस्ट्रेलिया से आए जो राजस्थान एवं लाहौर के क्षेत्रों में संघर्ष कर–करके वहीं बस गए।

V. नीग्रीटो की विशेषताएं–

A. शारीरिक रूप से गठे स्वरूप
B. कपाल गुहा का आयतन–1200–1400 CC तक
C. आंखों का रंग–नीला–भूरा
D. त्वचा का रंग–श्वेत–श्याम
E. कद–165 सेंमी. तक
F. अधर–पतले–मध्यम
G. सिर–माध्यमिक रूप से ऊंचा
H. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं घोर धार्मिकता

6. मंगोलायड (MONGOLOIDS)

I. आगमन काल–ई.पू. 400– से 40 ई. तक

II. भारत में कहां–कहां हैं?

इस प्रजाति की उत्पत्ति मलेशिया से हुई है। इनका मूलस्थान एशिया ही है। चीन, मंगोलिया, मंचूरिया, कोरिया, मध्य एशिया आदि भागों में इनकी संख्या बहुतायत है। तिब्बती मंगोलायड की संख्या में विराजमान है। इनका कद लंबा, चौड़ा सिर, हल्का रंग, नाक थोड़ी दबी हुई होती है, इनके शरीर पर बाल बहुत कम होते हैं। श्रम इनकी नियति है।

III. वर्तमान पहचान–यह उप हिमालय प्रदेश, असम और बर्मा की सीमा पर नागा, मीरी और बोंडों के नाम से पाई जाती है। बांग्लादेश में चिटगांव पर्वतीय मूल निवासी जैसे चकमास इसी श्रेणी के हैं। इस प्रजाति की उत्पत्ति मध्य एशिया से हुई है। दक्षिण तथा (उत्तर भारत में कम) महाराष्ट्र, गुजरात प्रांत में तथा उड़ीसा और बिहार में ब्राह्मण और राय–ठाकुर के रूप में विद्यमान।

IV. कहां–कहां से आए?

A. उत्तर अल्पाइन (मंगोलिया) के पठार से
B. उत्तरी अफगानिस्तान से
C. सायान पर्वत माला
D. उलान पर्वत माला

V. मंगोलायड्स की विशेषताएं–

A. गोल सिर–कपाल सूचकांक 85–89
B. बाल सीधे और चपटे
C. चेहरा और जबड़ा नतोदर
D. नाक पतली और संकरी
E. रंग हल्का–पीला सा खुमानी
F. गुस्सैल, हिंसक और अंधविश्वासी
G. मुख्याहार–मांस, मदिरा, फल–कंद मूल

साभार – शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास
पृष्ठ सं. 84 से 91
एस. के. पंजम

कमलेश कुमार
अनुदेशक आई.टी.आई.,
पाण्डु नगर, कानपुर

गणतंत्र दिवस व रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं ...

गाथा सन्त रायदास की

सूर्यवंश क्षत्रिय सन्तों में,
है रायदास का नाम महान्।
जिनकी वाणी गूंज रही थी,
पश्चिम भारत के दरम्यान।।
बुद्ध प्रणीत अष्टांग साधना,
के वह साधक न्यारे थे।
महायान की सहज समाधि,
का वह उत्तम व्रत धारे थे।।
तप करने को काशी नासिक,
तिरुपति धार पधारे थे।
चित्तौड़ और सौराष्ट्र राजकुल,
उनका शिष्यत्व धारे थे।।
मीरा ने उनकी शिष्याबन,
उत्तम पदवी पाई थी।

राणा कुल के कुल गुरु श्री
रायदास की महिमा छाई थी।।
राणा और रायदास का कुल,
तो सूर्य वंश चल आया है।
किन्तु पश्चिमी भारत में यह,
चँवर वंश कहलाया है।।
बल्लभी, उज्जैन, चित्तौड़धार,
सौराष्ट्र चँवर कुल राज्य रहे
जिनके राजा राय और
राणा ही तो हैं गये कहे।
मुस्लिम और मराठों ने जब,
इन राज्यों को विजित किया।
और वहाँ के सुख वैभव को,
लूट जला कर नष्ट किया।।

तब से पेशवा शासन ने,
क्षत्रियों को घोषित शूद्र किया।
धन, विद्या से रखकर वंचित,
उनको हर विधि से दलित किया।।
चँवर क्षत्रियों को विप्रो ने,
धर्मकार कह अपमाना।
और सन्त रायदास को उन ने,
चर्मकार कहना ठाना।।
जन गणनाओं में विजित क्षत्रियों
को चमार फिर लिखवाया।
और बहुत से छल रखकर,
ब्राह्मण–क्षत्रिय संघर्ष चलाया।।
इसके लिए ही "चँवर पुराण"
की रचना द्विजो ने कर डाली।

जिसमें क्षत्रियों को 'चमार' की
पदवी है 'विष्णु' ने दे डाली।।
सन्त रायदास को क्षत्रिय कहना,
अब विप्रों के नहिं भाता।
तरह तरह के छल छिप्रों से,
करते उनकी अवनत गाथा।।
शूद्रो सच्चे इतिहासों के
पन्ने पलट जरा देखो
विप्र वर्ग से रह सचे
अपना इतिहास स्वयं लेखो।
ब्राह्मण शास्त्रों की बातों पर,
मत कदापि विश्वास करो।
ब्राह्मण धर्म रिवाज त्याग,
निज सन्त धर्म की बाट धरो।।

गुलामगीरी (ज्योतिराव और धोंडीराव-संवाद) परिच्छेद : एक

(ब्रह्मा की उत्पत्ति, सरस्वती और ईरानी या आर्य लोगों के संबंध में)

धोंडीराव : पश्चिमी देशों के अंग्रेज, फ्रेंच आदि दयालु, सभ्य शासकों ने इकट्ठा होकर गुलामी प्रथा पर कानूनन रोक लगा दी है। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने ब्रह्मा के (धर्म) नीति-नियमों को ठुकरा दिया है। क्योंकि मनुस्मृति में लिखा गया है कि ब्रह्मा (विराट पुरूष) ने अपने मुंह से ब्राह्मण वर्ण को पैदा किया है और उसने इन ब्राह्मणों की सेवा (गुलामी) करने के लिए ही अपने पांव से शूद्रों को पैदा किया है।

ज्योतिराव : अंग्रेज आदि सरकारों ने गुलामी प्रथा पर पाबंदी लगा दी है, इसका मतलब यह है कि उन्होंने ब्रह्मा की आज्ञा को ठुकरा दिया है, यही तुम्हारा कहना है न! इस दुनिया में अंग्रेज आदि कई प्रकार के लोग रहते हैं, उनको ब्रह्मा ने अपनी कौन-कौन-सी इंद्रियों से पैदा किया है और इस संबंध में मनुस्मृति में क्या-क्या लिखा गया है?

धोंडीराव : इसके संबंध में सभी ब्राह्मण अर्थात बुद्धिमान और बुद्धिहीन यह जवाब देते हैं कि अंग्रेज आदि लोगों के अधम, दुराचारी होने की वजह से उन लोगों के बारे में मनुस्मृति में कुछ भी लिखा नहीं गया।

ज्योतिराव : तुम्हारे इस तरह के कहने यह पता चलता है कि ब्राह्मणों के अधम, नीच, दुष्ट, दुराचारी लोग बिल्कुल हैं ही नहीं?

धोंडीराव : अनुभव से यह पता चलता है कि अन्य जातियों की तुलना में ब्राह्मणों में सबसे ज्यादा अधम, नीच, दुष्ट और दुराचारी लोग हैं।

ज्योतिराव : फिर यह बताओ कि इस तरह के अधम, नीच, दुष्ट, दुराचारी ब्राह्मणों के बारे में मनुस्मृति में किस प्रकार से लिखा गया है?

धोंडीराव : इस बात से यह सिद्ध होता है कि मनु ने अपनी संहिता में जो उत्पत्ति-सिद्धांत प्रस्तुत किया है, वह एकदम तथ्यहीन, निराधार है, क्योंकि वह सिद्धांत सारी मानव समाज पर लागू नहीं होता।

ज्योतिराव : इसीलिए अंग्रेज आदि लोगों के जानकारों ने ब्राह्मण लेखकों की बदमाशी को पहचानकर गुलाम बनाने की प्रथा पर कानूनी पाबंदी लगा दी। यदि यह ब्रह्मा सारी मानव समाज की उत्पत्ति के लिए सही कारण होता, तो उन्होंने गुलामी प्रथा पर पाबंदी ही नहीं लगाई होती। मनु के चार वर्णों की उत्पत्ति लिखी है। यदि इस उत्पत्ति को कुल मिलाकर, सभी सृष्टिक्रमों से तुलना करके देखा जाए, तो वह पूरी तरह से तथ्यहीन और निराधार ही दिखाई देगी।

धोंडीराव : मतलब, यह कैसे?

ज्योतिराव : ब्राह्मणों का कहना है कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए, पर कुल मिलाकर सभी ब्राह्मणों की आदिमाता ब्राह्मणी ब्रह्मा के किस अंग से उत्पन्न हुई, इसके बारे में मनु ने अपनी संहिता में कुछ भी तो नहीं लिखा है। आखिर ऐसा क्यों?

धोंडीराव : क्योंकि वह उन विद्वान ब्राह्मणों के कहने के अनुसार मूर्ख दुराचारी होगी। इसलिए फिलहाल उसे म्लेच्छ या विधर्मियों की पंक्ति में ही रखा जाए।

ज्योतिराव : हम भूदेव हैं, हम सभी वर्णों में श्रेष्ठ हैं, हमेशा बड़े गर्व से ऐसा कहने वाले इन ब्राह्मणों को जननी आदिमाता ब्राह्मणी ही है न? फिर तुम उसको म्लेच्छों की पंक्ति में किसलिए रखते हो? उसको वहां की शराब और गोमांस की बदबू कैसे पसंद आएगी? बेटे, तू यह बहुत गलत बात कर रहा है।

धोंडीराव : अपने ही कई बार सरेआम सभाओं में, भाषणों में कहा है कि ब्राह्मणों के आदिवंशज जो ऋषि थे, वे श्राद्ध के बहाने गौ की हत्या करके गाय के मांस से कई प्रकार के पदार्थ बनवा करके खाते थे। और अब आप कहते हैं कि उनकी आदिमाता को बदबू आएगी, इसका अर्थ क्या है? आप अंग्रेजी राज्य के दीर्घजीवी होने की कामना कीजिए और कुछ दिन के लिए रूक जाइए। तब आपको दिखाई देगा कि आज के अधिकांश मांगलिक भिखारी ब्राह्मण ऐसा प्रयास करेंगे कि रेसिडेंट, गवर्नर आदि अधिकारियों की उन पर ज्यादा-से-ज्यादा कृपा हो, इसलिए ये ब्राह्मण उनकी मेज पर के बचे-खुचे गोश्त के टुकड़े बुटलेर को भी लेने नहीं देंगे। क्या आपको यह मालूम नहीं कि अब कई महार बुटलेर ब्राह्मणों के नाम से अंदर ही अंदर फुसफुसाने लगे हैं? मनु महाराज ने आदिब्राह्मणी की उत्पत्ति के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। इसलिए इस दोष की सारी जिम्मेदारी उसी के सिर पर डाल दीजिए। उसके बारे में आप मुझे क्यों दोष दे रहे हैं कि मैं गलत-सलत बोल रहा हूं? छोड़िए इन बातों को, आगे बताइए।

ज्योतिराव : अच्छा, जैसी आपकी मरजी, वही सच क्यों न हो। अब ब्राह्मण को पैदा करने वाले ब्रह्मा का जो मुंह है, वह हर माह मासिक धर्म (माहवारी) आने पर तीन-चार दिन के लिए अपवित्र (बहिष्कृत) होता था या लिंगायत नारियों की तरह भस्म लगाकर पवित्र (शुद्ध) होकर घर के काम-धंधे में लग जाता था। क्या मनु ने इस बारे में कुछ लिखा है कि नहीं?

धोंडीराव : नहीं। किंतु ब्राह्मणों की उत्पत्ति का आदि कारण ब्रह्मा ही है। और उसको लिंगायत नारी का उपदेश कैसे उचित लगा होगा? क्योंकि आज के ब्राह्मण लिंगायतों से इसलिए घृणा करते हैं, क्योंकि वे इसमें छुआछूत नहीं मानते।

ज्योतिराव : इससे तुम ही सोच सकते हो कि ब्राह्मण का मुंह, बांहे, जांघें और पांव-इन चार अंगों की योनि, माहवारी (रजस्वला) के कारण, उसको कुल मिलाकर सोलह दिन के लिए अशुद्ध होकर दूर-दूर रहना पड़ता होगा। फिर सवाल उठता है कि उसके घर का काम-धंधा कौन करता होगा? क्या मनु महाराज ने अपनी मनुस्मृति में इसके बारे में कुछ लिखा भी है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं जी।

ज्योतिराव : अच्छा, वह गर्भ ब्रह्मा के मुंह में जिस दिन से ठहरा, उस दिन से लेकर नौ महीने तक किस जगह पर रहकर बढ़ता रहा, इस बारे में भी मनु ने कुछ कहा है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं जी।

ज्योतिराव : अच्छा। फिर जब यह ब्राह्मण पैदा हुआ, उस नवजात शिशु को ब्रह्मा ने अपने स्तन का दूध पिलाया या बाहर का दूध पिलाकर छोटे से बड़ा किया, इस बारे में भी मनु महाराज ने कुछ लिखा है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं जी।

ज्योतिराव : अपनी सावित्री के होते हुए भी ब्रह्मा ने उस नवजात शिशु के गर्भ का बोझ अपने मुंह नौ महीने तक संभालकर रखने, उसे जन्म देने और उसकी देखभाल करने का झमेला अपने माथे पर क्यों ले लिया? यह कितना बड़ा आश्चर्य है।

धोंडीराव : उसके (ब्रह्मा के) शेष तीन सिर इस झमेले से दूर थे या नहीं? आपकी राय इस बारे में क्या है? उस रंडीबाज को इस तरह से मां बनने की इच्छा क्यों पैदा होगी?

ज्योतिराव : वह रंडीबाज इतना गिरा हुआ आदमी था कि उसने सरस्वती नाम की अपनी कन्या से ही संभोग (व्यभिचार) किया था। इसीलिए उसका उपनाम बेटीचोद हो गया है। इसी बुरे कर्म के कारण कोई व्यक्ति उसका मान-सम्मान (पूजा) नहीं कर रहा है।

धोंडीराव : यदि सचमुच में ब्रह्मा को चार मुंह होते, तो उसी हिसाब से उसे आठ स्तन, चार नाभियां, चार योनियां और चार मलद्वार होने चाहिए। किंतु इस बारे में सही जानकारी देने वाला कोई लिखित प्रमाण नहीं मिल पाए हैं। फिर, उसी तरह शेषनाग की शैया पर सोनेवाले को, लक्ष्मी नाम की स्त्री होने पर भी, उसने अपनी नाभि से चार मुंह वाले बच्चे को कैसे पैदा किया? इस बारे में यदि सोचा जाए तो उसकी स्थिति भी ब्रह्मा की तरह ही होगी।

ज्योतिराव : वास्तव में, हर दृष्टि से सोचने के बाद हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि ब्राह्मण लोग समुद्रपार जो ईरान नाम का देश है, वहां के मूलनिवासी हैं। पहले जमाने में उन्हें ईरानी या आर्य कहा जाता था। इस मत का प्रतिपादन कई अंग्रेजी ग्रंथकारों ने उन्ही के ग्रंथों के आधार पर किया है। सबसे पहले उन आर्य लोगों ने बड़ी-बड़ी टोलियां बनाकर इस देश में आकर कई बर्बर हमले किए। यहां के मूलनिवासी राजाओं के प्रदेशों पर बार-बार हमले करके बड़ा आतंक फैलाया। फिर (बटू) वामन के बाद आर्य (ब्राह्मण) लोगों का ब्रह्मा नाम का मुख्य अधिकारी हुआ। उसका स्वभाव बहुत जिद्दी था। उसने अपने काल में यहां के हमारे आदिपूर्वजों को अपने बर्बर हमलों में पराजित कर उन्हें अपना गुलाम बना लिया। बाद में उसने अपने लोग और इन गुलामों में हमेशा-हमेशा के लिए भेदभाव बना रहे, इसलिए कई प्रकार के नीति-नियम बनवाए। इन सभी घटनाओं की वजह से ब्रह्मा की मृत्यु के बाद आर्य लोगों का मूल नाम अपने-आप लुप्त हो गया और उनका नया नाम पड़ गया 'ब्राह्मण'।

फिर मनु महाराज जैसे (ब्राह्मण) अधिकारी हुए। पहले से बने हुए और अपने बनाए हुए नीति-नियमों का विरोध बाद में भी कोई न कर पाए, इस डर की वजह से उसने ब्रह्मा के बारे में नई-नई तरह की कल्पनाएं फैलाईं। फिर उसने इस तरह के विचार उन गुलाम लोगों के मन-मस्तिष्क में ठूंस-ठूंसकर भर दिए कि ये बातें ईश्वर की इच्छा से हुई हैं। फिर उसने शेषनाग शैया की दूसरी अंधी कथा (पुराण कथा) गढ़ी और समय देखकर, कुछ समय के बाद, उन सभी पाखंडों के ग्रंथ-शास्त्र बनाए गए। उन ग्रंथों के बारे में शूद्र गुलामों को नारद जैसे धूर्त, चतुर, सदा औरतों में रहने वाले छिछोरे द्वारा ताली पीट-पीटकर उपदेश करने की वजह से यूंही ब्रह्मा का महत्व बढ़ गया। अब हम इस ब्रह्मा के बारे में, शेषनाग शैया करने वाले के बारे में खोज करने लगे, तो उससे हमें कोई फायदा तो होगा नहीं, बल्कि हम दोनों का यह बड़ा कीमती समय व्यर्थ में खर्च होगा, क्योंकि उसने जानबूझकर उस बेचारे को सीधा लेटा हुआ देखकर उसकी नाभि से यह चार मुंहवाले बच्चे को पैदा करवाया। मुझे यह औंधे मुंह पड़े गरीब पर ऊपर से पांव रखने जैसा लगता है, इसमें अब कुछ मजा नहीं है।

सामार – गुलामगीरी
पृष्ठ सं. 30 से 33
ज्योतिराव फुले
डॉ. विमलकीर्ति

अरबी व्यवस्था और हजरत मुहम्मद साहब के प्रयास

मैंने अक्सर नोट किया है कि जैसे-जैसे हिंदू स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन होते हैं? उसका सीधा असर मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति पर भी पड़ता है। मुस्लिम समाज में मैंने जो खास बात देखी, वह यह है कि इसमें सिद्धांत और व्यवहार में काफी फर्क है। इस समाज में स्त्रियों की स्थिति जानने के लिये हमें सबसे पहले अरबी सामाजिक व्यवस्था में मुस्लिम स्त्रियों का स्थान पता करना होगा। इसके बिना यह अध्ययन अधूरा रहेगा।

अरब इस्लाम का केंद्र

सभी जानते है कि अरब इस्लाम का केंद्र शुरू से रहा है। खास बात यह है कि अरबी समाज में स्त्रियों की स्थिति हमेशा पुरूषों से उच्च तथा महत्वपूर्ण रही है। इस समाज में स्त्रियों को सामाजिक सम्पर्क एवं विवाह के क्षेत्र में सर्वोच्च एवं महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त थे। इतिहास को उठाकर देखा जाए तो पता चलता है कि इस समाज की महिलाओं को यह पूरा अधिकार था कि वे अपनी इच्छा से किसी भी पुरूष से विवाह कर सकें। दरअसल इस समाज में विवाह का एकमात्र उद्देश्य यौन संतुष्टि और यौन सुख की प्राप्ति समझा जाता था। इसलिए यह सम्बंध अस्थायी होता था। महिलाएं अपनी इच्छा से विवाह सम्बंध-विच्छेद कर सकती थीं और दूसरे पुरूष से विवाह रचा सकती थीं। गर्भवती होने पर भी वे आसानी से विवाह सम्बंध-विच्छेद कर सकती थीं। जितना मैंने अरबी इतिहास पढ़ा है, उसके अनुसार अरबी समाज महिला प्रधान था। स्त्री की संतानों को सामान्यतः स्त्री पक्ष के लोगों द्वारा ही पाला जाता था। इस समाज में अस्थायी विवाहों का ही प्रचलन था। इस तरह के विवाह को 'बीना' कहा जाता था। लेकिन समय के साथ-साथ इस समाज का भी पतन होने लगा। महिलाओं के अधिकार व आजादी ध्वस्त होने लगी। इस समाज में भी बाल-विवाह, बहु-पत्नी विवाह आदि का प्रचलन होने लगा तथा स्त्रियों को लूटकर बेचा जाने लगा। देखते ही देखते अरबी मुस्लिम समाज पितृ प्रधान होता चला गया। इस समाज में स्त्रियों से विवाह-विच्छेद के अधिकार छीन लिए गए। फिर समय के साथ-साथ इस समाज में स्त्रियां पूरी तरह से पुरूषों के अधीन होती चली गई।

हजरत मुहम्मद साहब ने किया प्रयत्न

हजरत मुहम्मद साहब ने सातवीं शताब्दी के शुरू में एक नई विचारधारा इस्लाम को जन्म देकर पुरानी रूढ़ियों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। वे सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था को एक नया रूप देना चाहते थे। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था अत्यंत जटिल थी। कबाइली युद्धों आदि में युवा पति की मृत्यु के बाद पत्नी की स्थिति बद्तर हो जाती थी। इसके लिए उन्होंने कई बहुमूल्य प्रयास किए-जैसे बालात्कारी को संगसार करने, (पत्थर से मारने की सजा देना) औरत को अपने विवाह के लिए खुद निर्णय देने का हक अत्यंत महत्वपूर्ण थे। उन्होंने विधवाओं की दयनीय स्थिति को देखकर यह कहा कि-'एक पुरूष यदि चाहे तो चार पत्नियों तक से विवाह कर सकता है। बशर्ते कि वह उन चारों पत्नियों के भरण-पोषण में सक्षम हो। और प्रत्येक पत्नी के साथ एक समान व्यवहार हो सके। कुरान पढ़ने के बाद मुस्लिम पुरूषों ने मान लिया कि वे चार तक पत्नियां रखने के अधिकारी हैं। लेकिन वे इस बात को भूल गए कि सभी पत्नियों के साथ समान व्यवहार भी करना है।

आर्थिक सुरक्षा का यूं रखा ध्यान

कुरान में विवाह के अवसर पर स्त्री की आर्थिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसे 'मेहर' का अधिकार दिया गया। मेहर एक ऐसी रकम होती है जो लड़की के हक में लड़के पक्ष तथा लड़की पक्ष द्वारा विवाह से पूर्व तय कर ली जाती है। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। मेहर की रकम का तय होना वर-पक्ष के हाथ में बिलकुल भी नहीं होता बल्कि यह पूर्ण रूप से लड़की के हाथ में होता है। निकाह के वक्त वह चाहे तो एक रूपया मांग ले या दस लाख या सोने का पहाड़ (यह इस प्रकार है जैसे कि मुंह-मांगा) लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह कुछ भी मांग ले। नैतिक रूप से यह तय हो जाता है और एक पर्याप्त रकम पर रजामंदी हो जाती है। हां, अगर लड़की को इनकार है तो निकाह हो ही नहीं सकता। बात वहीं खत्म हो जाएगी।

कहां पांच सौ और कहां 61 लाख

आपको याद होगा कि जब वर्ष 2002 में पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब अख्तर ने फोन पर आयशा सिद्दीकी उर्फ महा सिद्दीकी से निकाह पढ़ा तो उस वक्त मेहर की रकम पांच सौ रूपय ही तय हुई थी। निकाहनामे में मेहर की रकम (यह रकम पति और पत्नी को निकाह के उपहार स्वरूप देता है, जो कि एक पत्नी का मूल अधिकार होता है) 500 पाकिस्तानी रूपये लिखी गयी थी। वहीं बाद में इसी व्यक्ति ने सानिया मिर्जा से जब निकाह किया तो निकाहनामे में 61 लाख रूपए मेहर दिया। काजी नजमुद्दीन जी ने निकाह को पढ़वाया, और उन्होंने मेहर की रकम को निकाहनामे पर लिखा।

यही नहीं, तलाक के बाद तलाकशुदा औरत को दूसरी शादी के लिए इद्दत के दन (Period of waiting) तक जो लगभग तीन महीने का होता है इंतजार करना पड़ता क्योंकि यह तस्दीक हो जाए कि कहीं वह गर्भ से तो नहीं, अगर ऐसा हुआ तो उसके सम्पूर्ण भरण पोषण के लिए इस्लामी कानून में इसका प्रावधान है। इसलिए शोएब ने 3 महीने के खर्च बतौर 15 हजार रूपए आयशा को दिए थे।

इस घटना से मैं सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि मेहर की रकम लड़की खुद तय करती है।

अगर वर पक्ष को वह कबूल हो तो निकाल हो जाता है, वर्ना नहीं। इस बात में कोई शक नहीं कि कुरान में स्त्रियों को विवाह-विच्छेद तथा सम्पत्ति सम्बंधी व्यापक अधिकार दिए गए। लेकिन हुआ क्या? लोगों ने कुरान के इन नियमों को ही तोड़-मरोड़कर पेश करना शुरू कर दिया। मुसलमान पुरूषों ने मेहर की इस रकम को स्त्री की कीमत माना और इसे चुकाकर स्त्री को अपनी मिल्कियत मानना शुरू कर दिया।

मुगल बादशाहों ने किया वंचित

इतिहास का अगर गहराई से अध्ययन किया जाए तो साफ पता चलता है कि मुगल बादशाहों ने स्त्रियों की शिक्षा व सामाजिक अधिकारों पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। इसका नतीजा हुआ कि मुस्लिम स्त्रियां अपने वास्तविक अधिकारों से वंचित होती चली गईं। इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि मुगलों के शासन में स्त्रियां केवल सुख और सौंदर्य का प्रतीक बनकर रह गई। इससे पर्दा प्रथा को प्रोत्साहन मिला। उनकी सम्पूर्ण आजादी परिवार की सीमाओं में कैद होकर रह गई।

मुस्लिम स्त्रियों को अधिकार

मुहम्मद साहब के प्रयत्नों से मुस्लिम स्त्रियों को जो अधिकार मिले, उनके बारे में मैं विस्तार से बताना चाहूंगा।

पहला : तलाक लेने का अधिकार

मुस्लिम समाज में प्रत्येक स्त्री को तलाक लेने का अधिकार दिया गया है, लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में ही। इस समाज में अदालती मुश्किलों तथा अन्य दिक्कतों से बचने के लिए सामाजिक रूप से तलाक लेने की व्यवस्था की गई है। मुस्लिम स्त्री अपने पति के दोषी होने की स्थिति में 'मेहर' की राशि छोड़कर पति से एक गवाह के सामने ही विवाह विच्छेद की घोषणा कर सकती है। लेकिन मैंने देखा है कि आमतौर पर व्यावहारिक रूप में एक मुस्लिम स्त्री पति की इच्छा के खिलाफ तलाक नहीं ले सकती।

दूसरा : बाल विवाह का खात्मा

इस्लाम में 14 वर्ष से कम आयु की लड़की के विवाह को मान्यता नहीं दी गई, जिससे बाल विवाह पर रोक लग सकी। यह व्यवस्था मुस्लिम स्त्रियों की सामाजिक स्थिति के लिए लाभदायक है। इस्लाम में यह भी प्रावधान है कि अगर किसी लड़की की शादी कम उम्र में कर दी जाए तो वह बालिग होने पर उसे रद्द कर सकती है लेकिन शर्त यह है कि उसने पति के साथ सहवास न किया हो। एक बात और साफ कर दूं कि मुसलमानों के 'शिया' सम्प्रदाय में विवाह के लिए न्यूनतम उम्र निर्धारित नहीं है। लेकिन यह भी बता दूं कि इस सम्प्रदाय के मुस्लिमों में कम आयु में विवाह करने की प्रथा नहीं है। कहा जा सकता है कि मुहम्मद साहब के प्रयासों से ही यह सम्भव हो सका है।

तीसरा : विधवा विवाह की अनुमति

इस्लाम में विधवा विवाह का विरोध नहीं है। कोई भी मुस्लिम विधवा पुनर्विवाह कर सकती है। इस्लाम में पति की मौत के बाद कुछ समय के लिए केवल 'इद्दत' की अवधि तक ही स्त्री पुनर्विवाह नहीं कर सकती। महिलाओं के लिए यह स्थिति बहुत अच्छी है और युवावस्था में विधवा हो जाने पर उन्हें विधवाओं जैसी मुश्किल जिंदगी नहीं जीना पड़ता।

चौथा : लड़की की मर्जी से ही शादी

मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिति इसलिए भी अच्छी हो गई है, क्योंकि उसकी शादी उसकी मर्जी के खिलाफ नहीं हो सकती। उसे किसी व्यक्ति विशेष से शादी करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। जब तक वह अपनी स्वतंत्र सहमति न दे दे, तब तक उसका विवाह नहीं किया जा सकता।

पांचवां : सम्पत्ति का अधिकार

मुस्लिम समाज में स्त्री को अपने पिता और पति दोनों की सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकार है। उसे पत्नी के तौर और बेटी के रूप में हिस्सा मिलता है। इसके अलावा उसे एक मां के तौर पर भी सम्पत्ति में हिस्सा मिलता है। मृत व्यक्ति की सम्पत्ति में मां का हिस्सा एक तिहाई और छठे भाग के बीच मिलता है। पत्नी को मृतक की सम्पत्ति का चौथे और आठवें हिस्से के बीच मिलता है। लेकिन साथ ही यह भी बता दूं कि जब उसे पति की सम्पत्ति में हिस्सा मिलता है तो मेहर की राशि अलग कर दी जाती है क्योंकि इस पर केवल पत्नी का ही हक होता है। शेष सम्पत्ति को लड़कियों और लड़कों में बराबर विभाजित कर दिया जाता है। इससे मुस्लिम स्त्री प्रायः घाटे में नहीं रहती तथा उसे उसका अधिकार मिल जाता है।

मुस्लिम स्त्रियों की समस्याएं

लेकिन इसके बावजूद मुस्लिम समाज में स्त्रियों की समस्याएं कम नहीं हैं। मैं पहले ही लिख चुका हूं कि मुस्लिम समाज में सैद्धांतिक और व्यावहारिक व्यवहार में काफी फर्क है। व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो मुस्लिम स्त्रियों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनके सामाजिक स्तर में ये समस्याएं प्रायः बाधक बनती हैं।

मुस्लिम समाज में स्त्रियों के साथ क्या समस्याएं हैं, आइए, उन पर विचार कर देखते हैं।

पहली समस्या : पुरूषों का तलाक का अधिकार

मेरे खयाल से यह एक प्रमुख समस्या है, जिस कारण एक मुस्लिम स्त्री अपने परिवार में अपने अधिकारों की मांग आजादी से नहीं उठा पाती। मुस्लिम पुरूषों को तलाक के मामले में व्यापक अधिकार मिला हुआ है। उन्हें

अधिकार है कि वे जब चाहें, सामाजिक रूप से स्त्रियों को तलाक दे सकते हैं। पुरूषों के इस अधिकार के सामने मुस्लिम महिलाएं परिवार में स्वयं को असहाय पाती हैं। उन्हे हर समय यह भय बना रहता है कि कहीं उनके पति उन्हें तलाक न दे दें।

दूसरी समस्या : बहु–पत्नी प्रथा

मुस्लिम समाज में प्रत्येक पुरूष को कानूनन चार पत्नियां रखने का अधिकार है। अब जब एक ही पति की चार पत्नियां होंगी तो वह सभी के साथ कैसे समान व्यवहार कर सकता है और दूसरा उन पत्नियों को कहां से वास्तविक अधिकार मिल सकेंगे।

इस बात में कोई भी संदेह नहीं है कि जब एक से अधिक पत्नियां होगी तो उनके स्वभाव और व्यवहार भी अलग–अलग होंगे तथा वे आपस में कलह करेंगी। वे अधिक से अधिक अपने पति पर अधिकार जताने का प्रयास करेंगी। पति प्रायः उनसे समान व्यवहार नहीं कर सकेगा तथा कहीं न कहीं स्वाभाविक रूप से पक्षपात जरूर होगा। इसी तरह उन पत्नियों के बच्चों को भी बराबर अधिकार मिलने मुश्किल हैं। इसलिए ऐसी स्थिति में हर मुस्लिम स्त्री का संघर्ष प्रायः बढ़ जाता है।

तीसरी समस्या : धर्म की कट्टरता

मुस्लिम धर्म स्त्रियों को अधिक ऊंचा उठाने के पक्ष में कभी नहीं रहा। इस धर्म को कट्टर कहा और माना जाता है। आज भी जब बात कानून की आती है तो उस पर धर्म हावी पड़ता है। मुल्ला–मौलवियों के आदेश कानून के ऊपर साबित होते हैं।

चौथी समस्या : पर्दा प्रथा

मुस्लिम समाज में यह आवश्यक था कि एक महिला को पूरे जीवन पर्दे में रहना है। यहां तक कि एक सौ साल की महिला का भी अगर कहीं जाना है तो वह बुर्के में ही जाएगी। इसी कारण मुस्लिम स्त्रियां शिक्षा, राजनीति और आर्थिक तौर पर पिछड़ी रह गईं। उनकी शिक्षा का स्तर भी गिरा। यह हर्ष का विषय है कि आज प्रगतिशील मुस्लिम परिवारों में विचार बदलने लगे हैं। तथा स्त्रियां शिक्षित होने लगी हैं तथा पर्दे से बाहर निकलने में सफल हो सकी हैं।

पांचवीं समस्या : अव्यावहारिकता

चाहे युग कितना भी बदला हो, लेकिन समाज में विधवा को आज भी हेय दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें अक्सर पुनर्विवाह का अवसर नहीं मिल पाता। वे पुरूषों पर आधारित होकर रह गई हैं तो तलाक लेना भी उनके वश में नहीं लगता। मैं कई मुस्लिम विवाहों में गया हूं और नोट किया है कि विवाह के समय लड़की से पूर्व स्वीकृति एक औपचारिकता भर बनकर रह गई है। स्त्रियों को मेहर की राशि भी कई बार काफी कठिनाई से मिल पाती है। कुछ समय पहले हिंदू स्त्रियां जिन अभावों से पीड़ित रही हैं, मुस्लिम स्त्रियां आज भी उन्हीं अभावों से स्पष्ट पीड़ित दिखाई देती हैं।

हिंदू और मुस्लिम महिलाओं की तुलनात्मक स्थिति

आइए, मुद्दे को पूरी तरह समझने के लिए हम हिंदू और मुस्लिम महिलाओं के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। इससे स्थिति और स्पष्ट हो जाएगी।

मुस्लिम धर्म में बाल–विवाह की स्वीकृति नहीं है। तरूण होने पर ही लड़की का विवाह किया जा सकता है और वह भी उसकी मर्जी से, लेकिन हिंदू धर्म में लड़कियों के विवाह से पूर्व उनकी स्वीकृति लेना जरूरी नहीं है।

हिंदू परिवारों में बेटी को बोझ माना जाता है, क्योंकि उसे दहेज देना पड़ता है। इसके विपरीत मुसलमानों में पति पत्नी को मेहर के रूप में धन–राशि देता है।

हिंदू एक पत्नी से अधिक नहीं रख सकता, वहीं मुसलमानों में एक पुरूष चार पत्नियां रख सकते हैं।

हिंदू समाज में विवाह एक अटूट सम्बंध के तौर पर देखा गया है। हिंदू स्त्रियां विवाह–विच्छेद का विचार शायद ही मन में ला पाती हैं, जबकि मुस्लिम समाज में धर्म इस बात की छूट देता है कि मुस्लिम स्त्रियां अपने पति से, पति की सहमति से तलाक ले सकती हैं। वर्तमान में हिंदू स्त्रियों को भी यह अधिकार मिल गया है कि वे विवाह–विच्छेद कर सकती हैं।

मुस्लिम समाज में अगर किसी लड़की का कम उम्र में विवाह कर दिया जाता है तो वह बड़ी होकर उस विवाह को खारिज कर सकती है, बशर्ते उसने पति से सहवास न किया हो, लेकिन हिंदू लड़के या लड़की को यह अधिकार नहीं दिया गया। आज भी धड़ल्ले से हिंदू समाज में बाल–विवाह हो रहे हैं। हालांकि बाल–विवाह पर रोक है। लेकिन इस तरह का विवाह होने पर लड़की बड़ी होकर उसे खारिज नहीं कर सकती।

कुल मिलाकर मैं यह नतीजा निकालता हूं कि मुस्लिम स्त्री को हिंदू स्त्री से कहीं ज्यादा अधिकार मिले हुए हैं, लेकिन वह अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पा रही। दूसरी ओर मुस्लिम समाज में पर्दा प्रथा हिंदू समाज से कहीं अधिक है। पश्चिमी सभ्यता को हिंदू स्त्रियों ने अधिक अपनाया है, जबकि मुस्लिम समाज पर इसका प्रभाव बहुत कम देखने को मिला है। एक बात और है कि हिंदू स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए जितने आंदोलन चले हैं, उतने मुस्लिम स्त्रियों के जीवन सुधार के लिए नहीं चले। मुस्लिम समाज में आज भी स्त्रियों के शिक्षा व आर्थिक स्वावलंबन को अधिक महत्व नहीं दिया जा रहा। अंत में यह भी कहना चाहूंगा कि आज के मुस्लिम युवक स्त्रियों के दावों को तेजी से स्वीकार भी कर रहे हैं, जिनसे मुस्लिम स्त्रियों का भविष्य ज्यादा उज्जवल होने का संकेत मिलता है।

साभार –
महिलाएं समझें अपने कानूनी अधिकार
पृष्ठ सं. 59 से 65 जे. के. वर्मा

संत रविदास का दर्शन

ब्राह्मणवाद के चिर–परिचित शत्रु बौद्ध धर्म का गुरु रविदास जी पर गहरा प्रभाव था। उन्होंने बौद्ध मत का ही जन भाषा में प्रचार किया। यही वजह है कि उन्होंने अपने समय के कट्टर ब्राह्मणों को शीघ्र ही अपना शत्रु बना लिया। यही शत्रुता बाद में गुरु जी की हत्या का सबब भी बनी। गुरुजी की वाणी में उपलब्ध बौद्ध तत्वों का अध्ययन हम बाद में करेंगे, पहले यह देखना जरूरी है कि बौद्ध धर्म समय की शिला पर घिसता हुआ तथा ब्राह्मण धर्म के क्रूर खूनी पंजों से लुटता–पिटता किस रूप में गुरु रविदास जी तक पहुंचा। आइए देखते हैं इतिहास के झरोखे से।

भद्रशील रावत जी लिखते हैं कि "भारत का इतिहास बताता है कि श्रमण संस्कृति के पुरोधा महावीर स्वामी और भगवान बुद्ध के सामने त्याग–तपस्या के क्षेत्र में सभी ब्राह्मण संस्कृति के अनुयायी बौने साबित हुए हैं। देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में विभाजित हुआ। आगे चलकर महायान भी वज्रयान, मंत्रयान एवं सहजयान में विभाजित हुआ। सहजयान के पुरोधा चौरासी सिद्ध थे, जिनका समय 7वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक रहा। इन सिद्धों ने काफी परिवर्तन के साथ बौद्ध धर्म का ही प्रचार किया। महास्थविर नागार्जुन का शून्यवाद ही इनके लिए स्वीकार्य हुआ। अतः 14वीं–15वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष रूप से लोप था, लेकिन सिद्धों एवं नाथों के द्वारा यह धर्म जनता में मौजूद था।"

600 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक बौद्ध धर्म पूरे भारतीय संघ में अपनी जड़ें जमा चुका था। 500 ईसा पूर्व के बाद बौद्ध धर्म भारत की सीमाओं को पार करके पूरे एशिया महाद्वीप में अपने पांव पसार चुका था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में तो यह महान धर्म एशिया महाद्वीप को लांघ कर यूरोप की सीमाओं तक पहुंच गया। सम्राट अशोक द्वारा भेजी गई बौद्ध भिक्खुणियां ग्रीस, इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन व इटली तक पहुंच चुकी थी। यरूसलेम से 30 किलोमीटर दूर खिरब्रेत कुमराज स्थान पर अशोक कालीन बौद्ध विहार प्राप्त हो चुका है। इन सब बातों के प्रमाण इतिहास के पाताल से खोजे जा चुके हैं।

इधर भारत में बौद्ध धर्म पर अपनी ऐतिहासिक दृष्टि डालते हुए श्याम सिंह जी 'संत रैदास की मूल विचारधारा' पुस्तक में लिखते हैं कि –

"600 ईसवी पूर्व से 150 ईसवी पूर्व तक लगभग 450 वर्ष तक बौद्ध धर्म का स्वरूप व्यवहारिकता में ज्यों का त्यों बना रहा। मौर्य साम्राज्य की समाप्ति के कुछ काल के बाद बाहर के लोगों का आना शुरू होता है। ग्रीक, बैक्ट्रीयन, पार्थियन, शुंग व कुषाण आदि एक के बाद एक आते गए और भारत में बसते गए। बाहर से आने वाले लोगों के अपने कुछ विश्वास थे, मर्यादाएं थीं, प्रथाएं थीं। इनमें से अधिकांश बौद्ध होने लगे, लेकिन विश्वास में भेद था, क्योंकि देश काल व परिस्थिति का अंतर मिलता है। बाहर से आने वाले लोग किसी न किसी देवता को जीवन में आदर्श मान रहे थे। इन लोगों ने जो सर्वोच्च से सर्वोच्च स्थान दिया, वह देवता को दिया हुआ है। ... इस प्रकार 150 ईसा पूर्व से 150 ईसवी तक लगभग 300 वर्ष तक विकास की प्रक्रिया चलती रही। जिसके कारण उसके (बौद्ध धर्म) के स्वरूप में कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़े। पुरावेत्ता राम प्रसाद चंदा ने पुरातत्व के आधार पर परिवर्तन की प्रक्रिया को उजागर किया। जिसका कारण दो समाजों का मिलना रहा। 300 वर्ष तक विकास की सतत प्रक्रिया ने बौद्ध धर्म को एक नया स्वरूप प्रदान किया। 600 ईसवी पूर्व से 150 ईसवी तक 750 वर्ष की यात्रा करने के बाद जो विकास धर्म ने किया वह विकसित स्वरूप महायान के नाम से बौद्ध जगत में जाना गया। इस प्रकार हीनयान व महायान दो रूप सामने आए। ... महायान में बहुत से देवता प्रवेश करते चले गए। इससे यह सिद्ध होता है कि समाज की वे छोटी–छोटी इकाइयां जो ट्राइबल ;ज्तपइंसद्ध स्तर पर थीं, जिनमें देवता आदर्श था, बौद्ध धर्म में सम्मिलित होती चल गई, क्योंकि यह एक व्यापक धर्म था। जब बड़े धर्म में छोटे–छोटे धर्म सम्मिलित होने लगते हैं, तो धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगता है। अतः गौतम बुद्ध की पूजा होने लगी। देश की चारों दिशाओं में साक्षी के रूप में प्राप्त बौद्ध संस्कृति के अवशेष की मात्रा इतनी अधिक है कि वह विद्वान व इतिहासकार को यह मानने के लिए बाध्य करती है कि गुप्त साम्राज्य की स्थापना (चौथी सदी) तक भी बौद्ध धर्म ही जनमानस का धर्म रहा। ...

गुप्त साम्राज्य की स्थापना के बाद महायान में परिवर्तन की प्रक्रिया पुनः शुरू होती है। ऐसा पांचवीं शताब्दी में दिखलाई पड़ता है। यह (बौद्ध धर्म) आगे चलकर वज्रयान, मंत्रयान व सहजयान के नाम पर जाना गया। असंगकाल (चौथी–पांचवी ईसवी) में रहस्यवाद जन्म लेता है। ... आद्य आचार्य के अनुसार तांत्रिक तत्व लगभग छठी शताब्दी के पूर्व महायान मे प्रविष्ट हो चुके थे। .... कुछ विद्वान वज्रयान की

शुरुआत 8वीं शताब्दी मानते हैं। .... यह परिवर्तन होने पर भी वज्रयान बौद्ध धर्म है। .... वंदना के स्वरूप में कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़ता है, लेकिन हर स्थिति में बुद्ध उनका रास्ता था, उनका गुरु था। ..... वज्रयान ही आगे चलकर सहजयान के नाम से जाना जाने लगा। इनका मूल बौद्ध धर्म है। ..... यह परंपरा बंगाल व बिहार में सहजिया संप्रदाय के रूप में 15वीं–16वीं शताब्दी तक रहती है। ..... नाथपंथी सिद्ध संप्रदाय के साथ–साथ मिलते हैं। .... नाथ संप्रदाय में गौतम बुद्ध को आदिनाथ और शिव कहा गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि गोरखनाथ का मूल भी बौद्ध धर्म था। ...इस संबंध में सारानाथ संग्रहालय में रखी 11वीं सदी की पत्थर से बनी गौतम बुद्ध की मूर्ति को देखा जा सकता है। गौतम बुद्ध को शिव में बदलने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। जो ऊपर से शिव जैसी और शेष बुद्ध के रूप में है। ..... 14वीं–15वीं शताब्दी तक सिद्ध संप्रदाय व नाथ पंथ चले आते हैं। .... सिद्धों व नाथों की अनुभूतियों व ज्ञान का सीधा संबंध निर्गुण संत व उनके साहित्य से है। अर्थात जिस ज्ञान व सामाजिक चिंतन को सिद्ध व नाथ एक के बाद एक 14वीं–15वीं शताब्दी तक आगे बढ़ाते रहे, उसे अब निर्गुण संत, विशेष रूप से रैदास व कबीर ने आगे बढ़ाया। .... इस प्रकार बौद्ध धर्म संत रैदास व कबीर साहेब को नाथों व सिद्धों से विरासत के रूप में प्राप्त होता है।.... डॉ. एल.बी. राम अनंत का मत है कि संत रैदास सहजिया संप्रदाय के विद्वान हैं।"

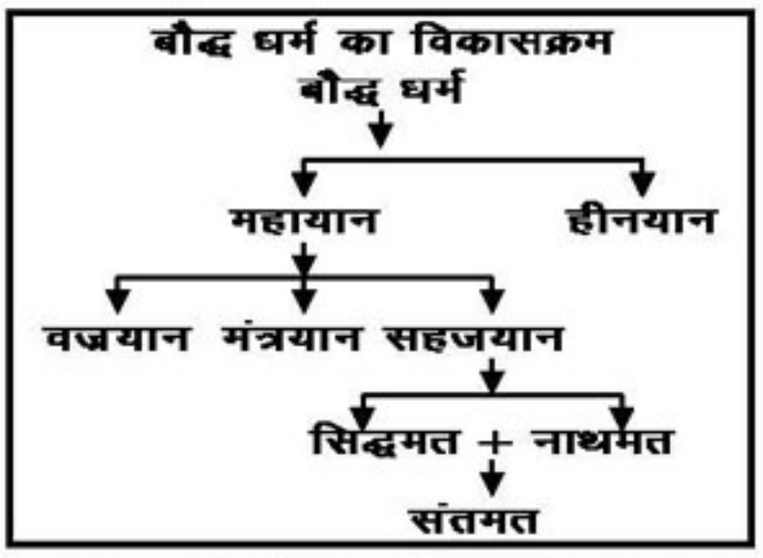

बुद्ध का धर्म संतों तक कैसे पहुंचा ? इस विषय में कंवल भारती जी एक दूसरा ही बड़ा रोचक एवं मान्य अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार – जब पुष्यमित्र जैसे पुरोहितशाही राजाओं ने भारत से बौद्ध धर्म को खदेड़ने का अभियान चलाया और बौद्ध भिक्खुओं का कत्लेआम शुरू किया तो जो संपन्न भिक्खु थे, वे भागकर पड़ोसी देशों में चले गए, किंतु बहुत से भिक्खु जो संपन्न नहीं थे, दीन–हीन थे और भागने में असमर्थ थे, गांवों में गृहस्थ वेष में रहने लगे थे। उन्होंने चीवर त्याग दिया था, सिर पर बाल रखने आरंभ कर दिए थे। धीरे–धीरे साधारण नागरिकों की तरह उन्होंने विवाह भी कर लिए थे। चूंकि वर्णाश्रम के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उन्हें अपने वर्णों में सम्मिलित नहीं कर सकते थे। अतः दलित जातियों में सम्मिलित होने के अलावा कोई अन्य रास्ता उनके पास था ही नहीं। इन प्रच्छन्न बौद्धों ने दलित वर्गों में रहकर भी बुद्ध धर्म के प्रति आस्था को समाप्त नहीं किया था। बुद्ध के आकार की चौतरी बनाकर वे घरों में ही पूजा–अर्चना करते रहे, जिसका विकृत रूप आज भी उत्तर भारत के दलित घरों में मौजूद है। साथ ही इस डर से कि वे पहचान न लिए जाएं, उन्होंने अपनी प्रत्येक कार्य विधि और अभिव्यक्ति को हिंदू रंग में रंग लिया था। चूंकि मुस्लिम शासक भी बौद्धो के शत्रु थे, इसलिए उन्होंने राम के साथ रहीम तथा वेद के साथ कुरान को भी अपना लिया था और अपने काव्य को ऐसा रूप दे दिया था कि उसमें हिंदुओं का भक्ति योग भी था और इस्लाम का एकेश्वरवाद भी दिखाई दे सकता था। किंतु उनके काव्य का मूलाधार बुद्ध का दर्शन ही था, जिसे उन्होंने हिंदू रंग में डूबोकर इस अंदाज में प्रस्तुत किया था कि उसमें बुद्ध का ज्ञान, प्रेम का निर्झर बनकर फूट पड़ा था। इस प्रेम की विशेषता यह है कि बुद्ध के विरोधी भी उसे अस्वीकार करने का साहस नहीं कर सके। किंतु दलित जीवन कितना कटु एवं पीड़ादायक है, इस यथार्थ को उन्होंने पहली बार ही भोगा था। अतः सामाजिक विषमता और अस्पृश्यता के असहनीय अभिशाप के विरुद्ध उनकी अनुभूतियां विद्रोही हो गईं। उन्होंने दलित जातियों में क्रांति चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से बुद्ध के दर्शन को विकसित करने की आवश्यकता महसूस की, किंतु बौद्ध धर्म को मूल रूप में प्रतिष्ठित करना तत्कालीन शासन सत्ता में खतरे से खाली नहीं था। इसलिए उन्होंने बुद्ध के दर्शन के अंतर्गत सर्वप्रथम दलित जातियों को स्वतंत्रता और समानता का बोध कराया तथा उनमें स्वाभिमान उत्पन्न किया।

इन्हीं प्रच्छन्न बौद्धों की परंपरा में आगे चलकर कबीर साहेब, रैदास साहेब, चोखा मेला साहेब, सैना साहेब, पीपा साहेब और क्रांतिकारी संत दलित जातियों में पैदा हुए। इन संतों के चिंतन और आचरण दोनों पर ही बुद्ध धर्म का प्रभाव था, लेकिन बुद्ध के अनिश्वरवाद के सिद्धांत के कारण हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही बौद्ध धर्म को जीवित देखना नहीं चाहते थे। दलित संतों की समस्या अनीश्वरवाद को सुरक्षित रखने की थी। वे उसे ऐसा रूप देना चाहते थे, जिससे की उसकी मूल भावना भी विद्यमान रहे और शत्रु पक्ष उसकी अर्थवत्ता को समझ भी न सके। अतः वे छद्म ईश्वरवादी हुए। उन्होंने इस परमात्मा को हरि, राम, कृष्ण, रहीम, अल्लाह आदि नामों से पुकारा सिर्फ इसलिए कि तत्कालीन समाज उनकी पहचान नास्तिक रूप में न कर सके। क्योंकि नास्तिक अथवा ईश्वर से इंकार करने वाले ब्राह्मणों के ही दुश्मन नहीं थे, अपितु मुसलमानों को भी दुश्मन थे। गूढ़ अर्थों में उनका निर्गुणवाद बौद्धों के शून्यवाद पर आधारित था जो अनीश्वरवाद का ही दूसरा रूप है।

रविदास वाणी और बौद्ध धर्म

अब तक के अध्ययन में हमने देखा कि किस तरह से बौद्ध धर्म के विकास की प्रक्रिया समय रूपी शिला पर घिसते–घिसते सिद्धों व नाथों से गुरु रविदास जी को प्राप्त हुई। जब हम गुरुजी की वाणी को सामने रखकर उसका विश्लेषण करते हैं, तब पाते हैं कि उन्होंने हूबहू बौद्ध दर्शन को ही आम बोल–चाल की भाषा में आम जनता में प्रचारित किया।

इस विषय में ओशों रजनीश लिखते हैं, "इसलिए रैदास को मैं कहता हूँ, वे भारत के संतों से भरे आकाश में ध्रुवतारा हैं। उनके वचनों को समझने की कोशिशें करना रैदास इसलिए भी स्मरणीय हैं कि रैदास ने वही कहा है, जो बुद्ध ने कहा है। लेकिन बुद्ध की भाषा ज्ञानी की भाषा है, रैदास की भाषा भक्त की भाषा है, प्रेम की भाषा है। ... रैदास ने फिर बुद्ध की बातें ही कही हैं पुनः, लेकिन भाषा बदल दी, नया रंग डाला। पात्र वही था, बात वही थी, शराब वही थी – नई बोतल दी .... ।

रैदास चमार हैं। जैसे किसी गहन अंतस्थल में बुद्ध अब भी गूंज रहे हैं। वही आग। लेकिन रैदास ने उस आग को आग नहीं बनने दिया, उस आग को रोशनी बना लिया।"

डॉ. विद्यावती मालविका जी ने अपने शेध ग्रंथ 'हिन्दी संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' में बौद्ध धर्म और साध संप्रदाय का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया हैं भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पंचशील की तुलना उन्होंने साध संप्रदाय के सिद्धांतों से निम्न प्रकार से की है–

बौद्ध धर्म	साध संप्रदाय
1. जीव हिंसा से विरत रहो	1. जीव हिंसा न करो
2. बिना दी हुई किसी वस्तु को ग्रहण करने से विरत रहो	2. किसी भी वस्तु के लिए लालच न करो
3. कामभोगों में मिथ्याचार से विरत रहो	3. एक पत्नी तथा एक पति का व्रत ग्रहण करो
4. असत्य भाषा से विरत रहो	4. कभी असत्य न बोलों
5. मादक द्रव्यों का व्यवहार न करो	5. शराब आदि मादक द्रव्यों से विरत रहो

पंचशील सिद्धांत और गुरु रविदास वाणी

ऊपर उल्लेख किए गए पंचशील सिद्धांतों का रविदास जी की वाणी में अथाह सागर उमड़ रहा है।

पहला सिद्धांत

पंचशील सिद्धांतों में पहला सिद्धांत जीव हिंसा से विरत रहने का है। इसका समर्थन करते हुए रविदास जी कहते हैं कि –

'रविदास' जीव कूं मारि कर, कैसों मिलिहिं खुदाय
पीर पैगम्बर औलिया, कोउ न कहइ समुझाय
'रविदास' मूंडह काटि करि, मूरख कहत हलाल
गला कटावहु अपना, तऊ का होइहि हाल
प्राणी बध नहिं कीजियहि, जीवह ब्रह्म समान
'रविदास' पाप नहं छूटइ, करोर गउन करि दान
'रविदास' जीव मत मारहिं, इक साहिब सभ मांहि
सभ मांहि एकउ आत्मा, दूसरह कोउ नांहि

दूसरा सिद्धान्त

पंचशील का दूसरा सिद्धांत बिना दी हुई किसी वस्तु के ग्रहण करने से विरत रहने का है। गुरु जी इस सिद्धांत का जोरदार समर्थन करते हैं। वे मेहनत की कमाई पर जीवन–यापन के पक्षधर हैं–

'रविदास' स्रम करि खाइहि, जौ लौ पार बसाय
नेक कमाई जउ करइ, कबहूं न निहफल जाय
स्रम कउ ईसर जानि कै, जउ पूजहि दिन रैन
"रविदास' तिन्हहिसंसारमंह,सदामिलहिसुखचैन
'रविदास' हौं निज हत्थहिं, राखौ रांबी आर
सुकिरित ही मम धरम है, तारैगा भव पार
प्रभ भगति स्रम साधना, जब मंह जिन्हहि पास
तिन्हहि जीवन सफल भयो, सत्त भाषै 'रविदास'

तीसरा सिद्धांत

काम भोगों के मिथ्याचार से विरत रहने की शिक्षा गुरु रविदास जी एक पपीहे के प्रतीक द्वारा बड़े सुंदर शब्दों में देते हैं–

ऐक अभिमानी चात्रिगा, विचरत जग मांही ।
जदपि जल पूरण मही, कहूँ वा रूचि नाहीं।।
जैसे कामी देषै कामिनी, रिदै सूल उपाई।
कोटि बैद बिध उपचरै, बाकी बिथा न जाई।।
जो जिहिं चाहे सो मिलै, आरति गति होई।
कहै 'रविदास' यहु गोपि, नाहीं जानै सब कोई।।

अर्थात स्वाति का जल पीने की अपनी जिद पर अड़ा पपीहा संसार भर में विचरता है। यद्यपि धरती जल से भरी हुई है। फिर भी उस पपीहे की रुचि उसमें नहीं है। ठीक उसी प्रकार कामी के हृदय में कामिनी को देखकर जो प्रेम की पीड़ा उभरती है, वह करोड़ों वैद्यों के अनेकानेक उपचार से भी दूर नहीं होती ।

एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं–

"काम क्रोध में जन्म गंवायौ, साध संगति
मिलि राम न गायो"

चौथा सिद्धान्त

असत्य भाषा से विरत रहने के चौथे पंचशील सिद्धांत को रविदास जी समर्थन देते हुए कहते हैं–

"रविदास सत्त मति न तिआगिए, जौ लौं घट मंहि प्रान
सत्त म्रिस्ट करि जगत मंहि, सदा होत अपमान
जिन्ह नर सत्त तिआगिया, तिन्ह जीवन मिरत समान
रविदास सोई जीवन भला, जहं सम सत्त प्रधान

पांचवां सिद्धान्त

पंचशील का पांचवां सिद्धान्त है मादक द्रव्यों से विरत रहना। रविदास जी ने इसकी जोरदार वकालत की हैं वे बार-बार कहते हैं-

"सुरसरी सलल कृत बारूनी रे संत जन करत नहीं पान"

अर्थात् यदि शराब गंगाजल से भी बनाई गई हो, तब भी संत जन उसे नहीं पीते।

'रविदास' मदुरा का पीजियै, जो चढ़ै-चढ़ै उतराय।
नांव महारस पीजियै, जौ चढ़ै नाहि उतराय।।

अर्थात् रविदास जी कहते हैं कि उस शराब का पीना भी क्या पीना, जिसका नशा एक बार चढ़ने पर उतर जाता है और उसे बार-बार पीना पड़ता है। पीना ही है, तो सतनाम रूपी महारस को पीना चाहिए। जिसका नशा एक बार चढ़ने के बाद फिर कभी नहीं उतरता।

मोटे तौर पर हमने देखा कि बुद्ध द्वारा पांचशील के सिद्धांतों का गुरु रविदास जी ने खूब प्रचार-प्रसार किया है। अगले पृष्ठों में हम बौद्ध धर्म के अन्य मुख्य सिद्धांतों आदि का गुरु रविदास की वाणी से तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

सिद्धों का वज्र (मणि) गुरुजी का हीरा

डॉक्टर धर्मवीर भारती जी अपने शोध प्रबंध 'सिद्ध साहित्य' में लिखते हैं कि "सिद्धाचार्यों द्वारा अभिसित वज्र या मणि के उस अर्थ को तो संत भूल चुके थे, किंतु सहज पद्धति के साथ चित्त को मणि अथवा हीरा बनाने की प्रक्रिया उनकी परंपरा में अवस्थित रह गई थी। रविदास जी के शब्दों में-

पीवत डोलत फूल फल अमृत सहज भई मति हीरा

एक अन्य स्थान पर तो वे हरि भी हीरा के रूप में चित्रित करते हैं-

हरि सो हीरा छाड़ि के, करे आन की आस।
वो नर दोजख जाएंगे, सत भाषै रविदास।।

एक अन्य स्थान पर गुरुजी लिखते हैं-

ताउ हीरा हाथ परै।

सिद्धों की वज्र (मणि) को गुरु जी एक स्थान पर पारस मणि भी कहते हैं-

परसु परसै दुबिधा न होई

गुरु रविदास जी का सत्तनाम

डॉ. विद्यावती मालविका अपने शोधग्रंथ 'हिंदी संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' में लिखती हैं कि कबीर ने जिसे सतनाम कहा है और सतगुरु से प्राप्त महौषधि माना है, जिसका स्मरण करना परमावश्यक है, क्योंकि उसी के स्मरण से परमपद की प्राप्ति होगी। वह सत्तनाम पालि भाषा के 'सच्चनाम' का रूपांतर है। पालि भाषा में 'सच्चनाम' का प्रयोग भगवान बुद्ध के लिए हुआ है। अंगुत्तर निकाय के चार सूत्रों की गाथाओं में बार-बार 'सच्चनाम' को दुहराया गया है-

'अक्खाता सच्चनामेन उभयत्थ सुखावहा"

अर्थात् सच्चनाम (सत्तनाम) ने इन्हें दोनों लोकों के लिए सुखदायक कहा है। ऐसे ही बुद्ध के लिए पालि ग्रंथो में सच्चनिकम्मो (सत्यवादी), सच्चह्वयो (सत्यनाम वाले) सच्चवादी (सत्यवादी) आदि शब्दों का व्यवहार हुआ है। मज्झिम निकाय के इसिगिल सुत्त में 'सत्यनाम' से एक प्रत्येक बुद्ध का भी उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट है कि सच्चनाम वाले भगवान बुद्ध ही कबीर के सत्तनाम हो गए हैं।"

डॉ. मालविका जी ने पालि के सच्चनाम का अध्ययन कबीर जी पर किया है, लेकिन यह शब्द हम नानक से लेकर रविदास तक हर निर्गुणियां संतों के साहित्य में उपलब्ध पाते हैं।

रविदास जी की वाणी में इसका खूब प्रयोग हुआ है-

इड़ा पिंगला सुसुम्णा, बिध चक्र प्रणयाम।
रविदास हौं सबहि छांड़ियो, जबहि पाइहू सत्तनाम।।

इक चिंता सतनाम की, दरसाइहु परम तत्त।
सहज परम भक्ति भई, 'रविदास' पाइहि ब्रह्म सत्त।।

"कहै 'रविदास' नामु तेरो आरती, सतिनामु है हरि भोग तुहारे।।"

अंतर्मुखी मइ जउ करहिं, सत्तनाम करि जाप।
रविदास तिन्ह सौं भजहुहिं, जगतह तीन्हहु ताप।।

'रविदास' अराधहु देवकूं, इकमल हुई धरि ध्यान ।
अजपा जाप जपत रहहु, सत्तनाम सत्तनाम।।

यहाँ यह बात भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि गुरु रविदास जी ने सतनाम के साथ ही कहीं-कहीं 'सत्तराम' का भी उल्लेख किया है, जैसे -

भाई रे! राम कहां माहि बताओ 'सत्तराम', ताके निकट न आओ।
मन रैदास उदास ताहि ते करता जग बिसराई।
केवल करता एक सही सिर, 'सत्तराम तेहि नाई ।।

इस 'सत्तराम' का विश्लेषण प्रसिद्ध विद्वान भद्रशील रावत जी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में किया है, "और यह भी सत्य है कि यह 'सत्यराम' ही रूपांतरित होकर 'सत्यनाम' हो गया है।"

वास्तव में यहाँ पर गुरु रविदास जी ने 'सत्तराम' जी का उल्लेख किया है। वह ब्राह्मणों के वर्णाश्रमी राम के मुकाबले का अविनाशी राम (सत्तराम) है। क्योंकि अयोध्यावासी राम तो जन्म-मरण के चक्र में पिसता हुआ राम है, वह अविनाशी राम नहीं है-

राम कहत सब जग भुलाना।
सो यह राम न होई।।

"रविदास हमारो राम जी दशरथ करि सुत नांहि।" नाम महिमा

गुरु रविदास जी ने नाम की बड़ी महिमा गाई है। इस नाम महिमा का उल्लेख बौद्धों ने भी खूब किया है। बुद्धघोष द्वारा लिखित 'विशुद्धि मार्ग' के अठारहवें अध्याय में नाम महिमा का निर्देशन देखा जा सकता है।

"नाम मूल हे ग्यान कौ, नाम मुक्ति कौ दवार"
"सोइ तन कंचन जानइ, जिह तन नाम परगास।"
"रविदास सत्त इक नाम है, आदि अंत सचु नाम",
"जनम मरनु अरु जग जाला, नाम परताप न बिआपहि ब्याला।"
"भौ सागर रा तरन कूं, एकौ नाम अधार"

नामु तेरो आरती मजुन मुरारे।
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे।।
नामु तेरे आसनो नामु तेरो उरसा, नाम तेरो केसरो ले छिटकारे।
नामु तेरो अंभुला नामु तेरो चंदनो,
घसि जपै नामु ले तुझहि कउ चारे
नामु तेरो दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।
नाम तेरे की जोति लगाई, भइओ उजियारों भवन सगलारे
नाम तेरे तागा नाम फूल माला भार अठारह सगल जुठारे
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ,
नामु तेरा तुही चवर ढोलारे।।
दसअठा अठसठे चारे खाणी, इहै वरतणि है सगल संसारे
कहै रविदासु नामु तेरो आरती, सतिनामु है हरि भोग तुहारे।

अर्थात् हे प्रभु मेरे लिए तो तुम्हारा नाम ही आरती और तीर्थ स्थान है। तुम्हारें नाम के बिना पूजा-पाठ के सभी बहिर्मुखी विस्तार झूठे आडंबर हैं। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए आसन है। तुम्हारा नाम ही केसर रगड़ने की सिल है तथा नाम रूपी केसर को लेकर ही मैं तुम्हारें ऊपर छिड़कता हूँ। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए पानी है, नाम ही चंदन है तथा नाम सुमिरन द्वारा ही मैं नाम रूपी चंदन को घिसकर तुम्हें लगाता हूँ। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए दीपक, नाम ही बाती है और नाम ही तेल है। जब मैंने तुम्हारें नाम की ज्योति जलाई तक मेरे अंदर के भवन में उजियारा छा गया। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए धागा है, नाम ही फूलमाला है। अतः पत्थर की मूर्तियों पर चढ़ाई जाने वाली अट्ठारह भार की माला झूठी है। अठ्ठारह पुराणों तथा अड़सठ तीर्थों में उलझा समस्त संसार चार प्रकार की योनियों में चक्कर लगा रहा है। रविदास जी कहते हैं कि हे प्रभु तुम्हारा नाम ही मेरे लिए आरती है और मैं सच्चे नाम (सत्तनाम) का ही भोग तुम्हें अर्पित करता हूँ।

सहज समाधी

सिद्ध आचार्यों के सहज समाधि, सन्न अदि का वर्णन जब हम गुरुजी की वाणी में पढ़ते हैं, तब हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि गुरुजी सहजयानी बौद्ध थे। इसी संबंध में प्रो. एच.सी. जोशी (एच.सी. बौद्ध) जी लिखते हैं-

"गुरु (रैदास जी) की अष्टांग साधना बौद्ध धर्म के आर्य आष्टांगिक मार्ग का ही प्रतिरूप है। निर्वाण सहज शून्य, सहज समाधि, तज्र हठयोग, उल्टी साधना, अनित्य अशुभ आदि की भावना, परमतत्व आदि गुरुजी पर पड़े बौद्ध प्रभाव के द्योतक है। रविदास जी का सहज शून्य बौद्ध धर्म का निर्वाण ही है।" गुरुजी की वाणी से कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं-

"कहत रैदास सहज सुन्न संत"
"बिन सहज सिद्ध न होय"
मन ही पूजा मन ही धूप
मन ही सेऊ सहज सरूप
सहज सुन्न में माठी सखै, पीवै रैदास गुरुमुख दखै
बट का बीज जैसा आकाश, पसरयो तीन लोक पसारा
जहां का उपजा तहां बिलाई, सहज सुन्नि में रह्यो लुकाई
पहलै ग्यान का किया चांदिना, पीछै दीया बुझाई।
सूंनि सहज मैं दोऊ त्यागै, राम कहौं न खुदाई।।
"सहज परम भक्ति भई"
चलत-चलत मेरो मन थाकयो, अब मो पै चल्यो न जाई।
सोई सहजि मिल्यौ सोई सनमुख, कहै रविदास बड़ाई।।

"गुरु की सारि ज्ञान का अच्छर।
बिसरै तो सहज समाधि लगाऊं।।"
"सुन्न मंडल में मेरा वास"
"कह रविदास निरंजन ध्याऊं"
"सहज–समाधि उपाधि रहत फुनि"

इसी सहज सुन्न को नाथ संप्रदाय के गुरु गोरखनाथ जी ने अपने ग्रंथ 'सबदी' में लिखा है–

"बसती न सून्यं सून्यं न बसती अगम अगोचर ऐसा"

ब्राह्मणों की पोप लीला का विरोध

गुरु रविदास जी ने अपनी निर्भीक वाणी द्वारा ब्राह्मणों के खूनी महल की नींव हिला कर रख दी थी (देखें अध्याय धर्म के ठेकेदारों से ठन गई)। उनसे पहले बौद्धों ने भी ब्राह्मणों की पोप लीला की कसकर खबर ली थी।

आचार्य अश्वघोष जैसे बौद्ध दार्शिनिक तो यहाँ तक लिखते हैं, "यदि ब्राह्मण की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है, तो ब्राह्मणी की उत्पत्ति कहां से हुई? निश्चय ही ब्रह्मा के मुख से। यदि ऐसा ही है, तो वह ब्राह्मण की बहन हुई। इस तरह के संबंध लोकाचार के विरुद्ध हैं।"

बौद्ध दार्शनिक आचार्य धर्मकीर्ति जी ब्राह्मणों की पोपलीला पर करारा प्रहार करते हुए कहते हैं–

**वेद प्रामाण्यं कस्यचित् कार्तृवादः स्नाने धर्मेच्छा जातिवादालेपः।
संतापारंभः पापहानाय चेति ध्वस्त प्राानांलिंगानि पंचजाड्ये।।**

"वेद (ग्रंथ) की प्रमाणिकता, किसी (ईश्वर) का (सृष्टि), कर्त्तावाद, स्नान (करने) में धर्म (होने) की इच्छा रखना, जातिवाद का घमंड और पाप दूर करने के लिए (शरीर को) संताप देना, उपवास आदि करना। ये पांच अकल के मारे लोगों की मुर्खता की निशानियाँ हैं।"

हालांकि पूरा बौद्ध दर्शन ही ब्राह्मणवाद के खिलाफ एक खुला विद्रोह है। यहाँ उसकी एक झलक ही काफी है।

धम्मपद में भगवान बुद्ध कहते हैं–

**न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि योनिजं मत्ति सम्भवों।
'भोवादी' नाम सो होति स चे होति सकिंचनो।
अकिंचनं अनादानं तमहं ब्रमि ब्राह्मणं।**

धम्मपद–396

आर्थात् माता की योनि से पैदा होने के कारण में किसी को ब्राह्मण नहीं कहता। यदि वह धन से संपन्न हैं, तो वह भोगवादी है। जो परिग्रही है और त्यागी है, उसे ही मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

**न जटाहि न गोत्तेहि न जच्चा होति ब्राह्मणों।
यम्हि सच्चंच धम्मों व सो सुची सो ब्राह्मणो।।**

धम्मपद–393

अर्थात् न तो कोई ब्राह्मण इसलिए ब्राह्मण होता है कि उसने जटाएं बढ़ा ली हैं। न इसलिए कि उसका गोत्र ऊंचा है। न इसलिए कि उसने नारी की कोख से जन्म लिया है। किसी को तमी ब्राह्मण कहा जा सकता है, जिसमें सत्यता हो और धार्मिकता हो। वही पवित्र है और वही ब्राह्मण है।

मन नियंत्रण

बौद्ध परंपरा में सभी आचार्यों ने मन के नियंत्रण पर जोर दिया है। इस मन को साधे बिना कुछ भी प्राप्त नही हो सकता। धम्मपद की एक गाथा है–

**मनो पुब्बंगमा धम्मा मनों सेठ्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुठ्ठेन भासति वा करोति वा,
ततो नं दुक्खमन्वेति चक्कं' व वहतो पदं।।**

धम्मपद –1

अर्थात् मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ है, मन उनका प्रधान है, वे मन से ही उत्पन्न होती हैं। यदि कोई दूषित मन से वचन बोलता है या काम करता है, तो दुख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है, जिस प्रकार की चक्का गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैरों का।

गुरु रविदास जी ने भी मन के नियंत्रण का वर्णन बौद्धों की ही विचाराधारा के अनुरूप किया है–

**मन मेरो थिरु न रहाई
कहि रविदास मन थिरु हैसी, चलि सब छांड़ी गुरु सरणाई।।
"रेचित! चेति चेत अचेत"
"मन ही पूजा मन ही धूप, मन ही सेऊ सहज सरूप"
"जब मन मिल्यो, आस नहि तन की"
"मन चंगा तो कठौती में गंगा"**

गुरु महिमा

गुरु की महिमा का गान वज्रयानी बौद्धों ने खूब गाया है। वज्राचार्य इंद्रभूति जी के श्ब्दों में "जिस साधक के ऊपर गुरुजी की कृपा रहती है, वही उत्तम तत्त्व की प्राप्ति करता है, अन्यथा चिरकाल तक मूढ़ रह कर क्लेश पाता है। गुरु (रास्ता) ही बौद्ध धर्म और संघ है। उसी की कृपा से रत्नत्रय का ज्ञान प्राप्त होता है। अज्ञान के तिमिरांधों के लिए वह मार्ग प्रदर्शक है। सभी आनंदों का आश्रय है। सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। उसके समान और पूजनीय और महामुनि नहीं है। इसी लिए सभी प्रकार के प्रयत्न कर व्रती को गुरु की पूजा करनी चाहिए।" (दू वज्रयान वर्क्स संकलन–डॉ. विनयघोष भट्टाचार्य, श्लोक–23–26, पृष्ठ 33)

इस विषय पर नगेंद्रनाथ उपाध्याय जी लिखते हैं कि "गुरु पद ही बुद्ध पद है।... वज्रयानी ग्रंथों में गुरु को बुद्ध के समान पद दिया गया है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में भी गुरु को रास्ता कहा गया, जिसका अर्थ गुरु होता है।"

अपने पूर्ववर्ती बौद्धों से प्रेरणा लेते हुए गुरु रविदास जी ने भी गुरु की खूब महिमा गाई है। वे कहते हैं–

**"संत अनंतहि अंतर नाहिं"
हरि गुर साध समान चित, नित आगम तत मूल।
इन बिच अंतर जिन परौ, करवत सहन कबूल।।**

अर्थात् परमात्मा, सतगुरु और साधु–संतों का ह्रदय एक समान होता है। यही शास्त्रों (बौद्ध ग्रंथों) का मूल तत्त्व है। इनके बीच कोई फर्क नहीं समझना चाहिए। इस सत्य का अनुसरण करने से यदि आरे से चीरे जाने की यातना भी सहनी पड़े तो उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

अन्य स्थानों पर गुरु की महिमा रविदास जी ने इस प्रकार गाई है–

**"गुरु ग्यानं दीपक दिया, बाती दई जलाय।"
"रविदास गुरु ग्यानं चाषु बिना, किमी मिटइ भ्रम फंद"
"रविदास गुरु रा ग्यांन बिनु, बिरला कौ बचि जाय"
"रविदास गुरु पतवार है, नाम नाव करि जान"
"कहि 'रविदास' मिल्यों गुर पूरौ, जिहि अंतर हरि मिलावै"
"सत गुर हमहु लषाई बाट"
"कहि रविदास गुरु राह दिषावह त्रिषा बुझि मिटि मन संताप।।"**

"संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' नामक शोध ग्रंथ में डॉ. विद्यावती मालविका जी लिखती हैं–

"गुरुजी की वाणी में अलख निरंजन, शून्य, सहज–शून्य, सत्यनाम, घट–घट व्यापी, ब्रह्म निर्गुण तत्त्व, तपतीर्थ स्नान की निस्सारता, आवागमन, अवधूत, मूर्ति पूजा की व्यर्थता, सुरति (स्मृति) शील, अनित्य अशुभ परमपद, निर्वाण, सन्यास तथा वेष धारण की निरर्थकता, गुरु महिमा, सत्संग से परम पद की प्राप्ति, सतगुरु, नाम महिमा, जन्म जात श्रेष्ठता (जातियता) का निषेध, ग्रंथ प्रमाण का बहिष्कार आदि बौद्ध तत्त्व साधना एवं विचारों के समन्वय पाए जाते हैं।"

डॉ. मालविका जी का उपरोक्त अध्ययन सत्य की कसौटी पर खरा उतरता है, जब हम रविदास जी की वाणी का इसी दृष्टि से अवलोकन करते हैं। उदाहरण के तौर पर भगवान बुद्ध के विश्वविख्यात वचन "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" का रविदास जी ने अपने शब्दों में कुछ यूं वर्णन किया है–

"संतन के मन होत है सबके हित की बात"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों मे, "यदि कबीर आदि निर्गुण मतवादी संतों की वाणियों की बाहरी रूप रेखा पर विचार किया जाए, तो मालूम होगा कि यह संपूर्णतः भारतीय है और बौद्ध धर्म के अंतिम सिद्धों और नाथपंथी योगियों से उनका सीधा संबंध है।"

गुरु रविदास जी भगवान बुद्ध के वारिस थे, इस विषय पर हमारे अब तक के अध्ययन के बाद कोई शंका शेष नहीं रह जानी चाहिए। अतः इस अध्ययन को मैं श्याम सिंह जी के शब्दों से ही समाप्त करना चाहूंगा। वे लिखते हैं, "बौद्ध साधना को समझाने की जो पद्धति संत रैदास ने अपनाई, वह सिद्ध करती है कि विरासत के रूप में बौद्ध धर्म व नाम सिद्धों से उनको प्राप्त हुआ। जिस प्रकार नाथ व सिद्ध आचार्यों ने भगवान बुद्ध की शिक्षा को आगे बढ़ाया, संत रैदास जी ने उसको फैलाने में कोई कसर बाकी नही छोड़ी। यह स्थिति संत रैदास को सहजयान से जोड़ती है। इसलिए स्वतः उनका सीधा संबंध भगवान बुद्ध से जुड़ जाता है। संत रैदास सहजयान संप्रदाय के विद्वान थे, जो बौद्ध धर्म का परवर्ती रूप है।"

साभार :
गुरु रविदास की हत्या के प्रमाणिक दस्तावेज

सेवा में,

नाम श्री.....

पता .....

.....

.....

गणतंत्र दिवस व रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं ...
अशोक कुमार
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम

गणतंत्र दिवस व रविदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं ...
संजीव कुमार कनौजिया
क्षेत्रीय लेखाधिकारी उ0प्र0 जल निगम कानपुर